मधुकर सिंह के कथा साहित्य में निरूपित ग्रामीण जीवन का अध्ययन

हिंदी विषय में
पी. एच. डी. उपाधि हेतु
कला एवं मानविकी महाविद्यालय ,
आई आई एम टी विश्वविद्यालय, मेरठ
को प्रस्तुत प्रस्तावित शोध कार्य की रूपरेखा
वर्ष **2021-22**

शोध निर्देशक: **शोधार्थी:**

डॉ पूनम शर्मा

पंकज कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर, (कला एवं मानविकी महाविद्यालय)

आई आई एम टी विश्वविद्यालय, मेरठ

शोध केन्द्र

कला एवं मानविकी महाविद्यालय

आई आई एम टी विश्वविद्यालय, मेरठ (उत्तर प्रदेश)

प्रस्तुत शोध कार्य का प्रारूप

1. शोधार्थी का नाम (हिंदी में) : पंकज कुमार

In English : PANKAJ KUMAR

2. शोध कार्य का शीर्षक (हिंदी में) : मधुकर सिंह के कथा साहित्य में निरूपित ग्रामीण जीवन का अध्ययन

In English : **Madhukar Singh Ke Katha Sahitya Me Nirupit Grameen Jeevan Ka Adhyayan**

3. शोध कार्य का स्थल:

(क) संस्था/विभाग का नाम जहां कार्य किया जा रहा है : आई आई एम टी विश्वविद्यालय, मेरठ

(ख)शोध की भौगोलिक स्थिति (यदि हो) : लागू नहीं

4. प्रस्तावित शोध कार्य का परिचय : संलग्न 1

5. प्रस्तावित शोध कार्य के मुख्य उद्देश्य : संलग्न 2

6. प्रस्तावित शोध कार्य की प्रासंगिकता : संलग्न 3

7. शोध संदर्भित साहित्य का सर्वेक्षण : संलग्न 4

8. प्रस्तावित शोध कार्य में शोध संबंधी रिक्तता : संलग्न 5

9. शोध प्रविधि / पद्धति : संलग्न 6

10. प्रस्तुत शोध कार्य का अध्यायवत विवरण : संलग्न 7

11. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची : संलग्न 8

संलग्न 1

प्रस्तावित शोध कार्य का परिचय

साहित्य जीवन के यथार्थ अनुभव की अभिव्यक्ति है । इसमें जीवन की वास्तविक भावनाओं और आकांक्षाओं का आधार होता है । हिंदी साहित्य की मूल धारा की प्रेरणा और उसका केंद्रीय भाव ग्रामीण जीवन ही है । इसी कारण साहित्यकारों के लिए आरंभ से ही ग्रामीण जीवन कौतूहल का केंद्र रहा है । लगभग सभी साहित्यिक विधाओं और कालों में ग्रामीण जीवन का युगबोध मिलता है । साहित्यकारों ने ग्रामीण जन जीवन का चित्रण स्वानुभूति के साथ साहित्य में किया है । साहित्यकार अपनी भूमि, अपने परिवेश, अपने समाज से हटकर सिर्फ कल्पना जगत में न रहकर यथार्थ के धरातल पर उतर कर अपनी अनुभूति से साहित्य का सृजन करता है । ग्रामीण जीवन को समझने के लिए साहित्यकारों ने अपने लेखन के माध्यम से साहित्य के अलग-अलग कालों में विभिन्न विधाओं के माध्यम से समकालीन और समसामयिक संदर्भ के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक युग बोधों को अपनी रचनाओं में उकेरा है ।

हिंदी कथा साहित्य में ग्रामीण जीवन का अपना एक विशेष महत्व है । यदि यह कहें कि हिंदी साहित्यकारों के लिए ग्रामीण जीवन एक जीवंत व्यक्तित्व है तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी । मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा है -

"अहा! ग्राम्य जीवन भी क्या है ?
क्यों न इसे सबका मन चाहे,
थोड़े में निर्वाह यहां है,
ऐसी सुविधा और कहां है ?"

वर्तमान संदर्भों में गाँव की ओर दृष्टि डाली जाए तो गाँव की स्थिति बड़ी ही शोचनीय प्रतीत होती है । इसी वस्तुस्थिति का

यथार्थपरक और मार्मिक चित्रण कथाकार मधुकर सिंह ने अपनी रचनाओं के माध्यम से किया है। उनकी रचनाओं में ग्रामीण जीवन का यथार्थ, समाज की सच्चाई और मानवीय मूल्यों की स्थापना का सार्थक प्रयास है। मधुकर सिंह ने ग्रामीण परिवेश को अपनी रचना का आधार बनाया है।

हिंदी साहित्य में ग्रामीण जनजीवन और परिवेश का यथार्थ चित्रण कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद
से आरंभ होता है जिसे मधुकर सिंह ने अपने लेखन से और अधिक सफल बनाने का प्रयास किया
है। यदि आजादी के पहले के ग्रामीण साहित्य को प्रेमचंद के साहित्य के माध्यम से समझा जाता है तो आजादी के बाद का ग्रामीण साहित्य मधुकर सिंह की रचनाओं के माध्यम से। साहित्यिक समीक्षकों के अनुसार मधुकर सिंह के उपन्यास ग्रामीण केंद्रित है, इसलिए इसमें जाति प्रथा, महाजनी व्यवस्था, सामंती व्यवस्था एवं रूढ़िवाद की जो गहरी समझ देखने को मिलती है उसका कारण ऐसी बहुत सी परिस्थितियों से स्वयं मधुकर सिंह का गुजरना था। मधुकर सिंह के जीवन का एक बड़ा हिस्सा घोर निर्धनता में गुजरा था। लेखक ने अपने जीवन में जातिगत भेदभाव, भाई पाटीदारों द्वारा जमीन लोलुपता की भावना से मिली प्रताड़ना, राजनीतिक भ्रष्टाचार से उत्पन्न संघर्ष, वर्ग एवं जातीय संघर्ष, सामंती व्यवस्था के प्रति संघर्ष या बंधुआ मजदूरों के प्रति संघर्ष, जो कुछ भी भोगा वह उनके व्यक्तित्व के साथ साथ उनकी रचनाओ की शक्ल लेता चला गया। इनकी रचनाओं में खेत, खलिहान, फसल, बागवानी, बगीचे, बाग,

तालाब आदि ग्रामीण वातावरण के दृश्य हैं । इस ग्रामीण वातावरण में रहने वाले किसान, मजदूर एवं अन्य ग्रामीणों की स्थिति अत्यंत दयनीय है । वे अशिक्षित होने के साथ साथ अंधविश्वास और शोषण के शिकार भी है । मधुकर सिंह एक मजदूर लेखक हैं, इसी कारण उनकी रचनाओं में संघर्ष सदैव शामिल रहा है । लेखक ने गाँव की समस्याओं उसकी परिस्थितियों एवं क्रियाकलापों को अपनी रचना का आधार बनाया है। इसी कारण इन्हें प्रेमचंद की परंपरा का कथाकार माना जाता है। डॉ गोपाल राय लिखते हैं "**सन सत्तर के इर्द-गिर्द नई कहानी के बिखराव और साठोत्तरी तथाकथित कहानीकारों के अध:पतन के पश्चात प्रेमचंद की कथाधारा को गति प्रदान करने वाले कथाकारों में मधुकर सिंह का नाम अग्रणी है"** ।

समकाल उपन्यास के महेंद्र सिंह का व्यक्तित्व मधुकर सिंह से मिलता जुलता है । इस उपन्यास में ग्रामीण राजनीति के विविध संदर्भों का वास्तविक रूप सामने आया है । मधुकर सिंह के उपन्यास **जगदीश कभी नहीं मरते** का आरंभ लगान वसूली की सामान्य प्रक्रिया से होता है। क्रांतिकारी जगदीश शोषण, उत्पीड़न और अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष करते हुए दिखलाई पड़ते हैं । मधुकर सिंह के **बाजे अनहद ढोल** उपन्यास में भी जमींदारों द्वारा कठोरता से वसूले जाने वाले लगान से आदिवासी त्रस्त नजर आते हैं ।इस उपन्यास में ग्रामीण समाज में चली आ रही

बरसों पुरानी महाजनी और सामंती प्रथा की उपस्थिति जनजाति जीवन के माध्यम से दिखाने का सफल प्रयास किया गया है ।

सबसे बड़ा छल उपन्यास में लेखक ने ग्रामीण परिवेश में घटित होने वाले समस्त प्रसंगों का अत्यंत प्रभावशाली ढंग से चित्रण किया है। इस उपन्यास में गाँव में पुलिस की स्थिति का चित्रण, गाँव की निम्न वर्ग में खैनी, गांजा आदि का प्रचलन, जातिवादी भावना और गंदी राजनीति का चित्रण तथा जमींदारों द्वारा शोषण का चित्रण यथार्थ रूप में किया गया है। मधुकर सिंह अपने जीवन संघर्ष की कथा में इस उपन्यास को अपनी आत्मकथा मानते हैं। **सोनभद्र की राधा** ग्रामीण दलितों के संघर्ष की गाथा है। इस उपन्यास में भारतीय समाज की जातिगत व्यवस्था को नकारते हुए मानव के समान अस्तित्व को स्वीकार किया गया है। **सीताराम नमस्कार** में औद्योगिकीकरण की समस्या, दलित वर्ग की समस्या, विधवा की समस्या, भ्रष्ट आचरण की समस्या, अत्यंत मर्मस्पर्शी रूप से प्रकट हुए हैं। **सहदेव राम का इस्तीफा** में भारतीय ग्रामीण जीवन का यथार्थ अपने विविध रूपों में मौजूद है। इसमें सामंती प्रवृत्ति की विस्तार से चर्चा, स्वतंत्र भारत में राशन की दुकान की स्थिति का वर्णन, कोर्ट कचहरी की राजनीति का घिनौना रूप तथा जातिवादी मनोवृत्ति चित्रित है। ग्रामीण यथार्थ बोध, दलित विमर्श, स्त्री विमर्श तथा शिक्षा के कारण समाज में आ रहे परिवर्तन की दृष्टि से यह उपन्यास महत्वपूर्ण है। **अर्जुन जिंदा है, मेरे गाँव के लोग** और **उत्तर गाथा** जैसे उपन्यासों में भी पुलिस की क्रूरता की व्यापक अमानवीयता को उजागर करने का प्रयास किया गया है।

किसान, मजदूर, दलित, शोषित और वंचित ग्रामीण के जनजीवन के दुख दर्द को, उनके संघर्ष को अपनी कहानियों का विषय बनाने वाले सुप्रसिद्ध कथाकार मधुकर सिंह की रचनाओं में उनके प्रति गहरी संवेदना है। इसलिए लेखन के साथ ही उन्होंने उनके संघर्षों में

भागीदारी भी की है। अपनी कहानियों में उन्होंने गाँव के जीवन और उसकी विसंगतियों के चित्र और उसका निदान संघर्ष के माध्यम से प्रस्तुत किया है। कहानी **कटहल का पेड़** महाजनी सभ्यता के खिलाफ एवं प्रतिरोध चेतना की कहानी है । महाजनी सभ्यता की शिकार पीड़िता का निम्न वर्ग से संबंध, उसका ग्रामीण होना, अशिक्षित होना और उसका स्त्री होना उसके लिए अभिशाप है। कहानी **हरिजन सेवक** में भी सामंत दलितों की झोपड़ियों में आग लगा देते हैं, लेकिन यह हरिजन सेवक ढोंग करता है कि झोपड़ियों के जलने से वह आहत है।

लहू पुकारे आदमी में भी निम्न जातियों के प्रति सामंती सोच को दिखाया गया है। कहानी **अगनुकापड़** में भी वर्तमान समय के पुलिस और कोर्ट कचहरी की वास्तविक स्थिति तथा बंधुआ मजदूरो से संबंधित समस्याओं का वर्णन है । इस कहानी में एक संघर्षशील हिम्मती औरत की कहानी को शामिल किया गया है। **उसका सपना** कहानी में भी जनजाति संघर्ष और जात पात तथा दल बंदी की बात कही गई है।

प्रस्तावित शोधकार्य **मधुकर सिंह के कथा साहित्य में ग्रामीण जीवन का अध्ययन** के अंतर्गत कथाकार मधुकर सिंह की कहानियों एवं उपन्यासों में ग्रामीण जीवन के सामाजिक पक्ष, आर्थिक पक्ष, राजनीतिक पक्ष, धार्मिक पक्ष और सांस्कृतिक पक्ष का विस्तारपूर्वक अध्ययन किया जाएगा।

संलग्न 2

प्रस्तावित शोध अध्ययन के मुख्य उद्देश्य

उद्देश्य एक पूर्व लक्षित लक्ष्य है जो किसी शोध प्रक्रिया को संचालित करता है तथा उसे पूरा करने के लिए प्रेरित करता है । प्रस्तावित शोध कार्य **मधुकर सिंह के कथा साहित्य में निरूपित ग्रामीण जीवन का अध्ययन** के निम्न उद्देश्य हैं :

1. मधुकर सिंह के व्यक्तित्व एवं साहित्यिक पक्ष का अध्ययन करना ।

2. ग्रामीण जीवन का अर्थ, स्वरूप एवं उसकी अवधारणा को स्पष्ट करते हुए साहित्यिक विधाओं के माध्यम से इसकी अभिव्यक्ति को स्पष्ट करना ।

3. मधुकर सिंह के ग्रामीण जीवन संबंधी लेखन के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त विसंगतियों को विश्लेषणात्मक ढंग से प्रस्तुत करना ।

4. मधुकर सिंह के कथा साहित्य में ग्रामीण जीवन के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक पक्ष को स्पष्ट करना ।

5. वर्तमान संदर्भ में मधुकर सिंह के कथा साहित्य में ग्रामीण जीवन की सार्थकता का पता लगाना।

6.कथाकार मधुकर सिंह के उपन्यासों और कहानियों में छिपे विद्यमान सामाजिक संदेशों को समाज के सामने लाना ।

प्रस्तावित शोध की प्रासंगिकता

ग्रामीण जीवन भारतीय सभ्यता और संस्कृति का मूल पक्ष है । अभी भी लगभग 55% लोग गाँव में निवास करते हैं । भारत के अधिकांश गाँव आज भी आजादी के इतने वर्षों बाद भी मूलभूत सुविधाओं के अभाव के कारण पिछड़ेपन के शिकार हैं । गाँव के परिदृश्य और विभिन्न पक्षों को देखने के बाद उत्पन्न समस्याओं के समाधान से हीं देश और समाज की प्रगति संभव है। गाँव के विकास के बिना देश का विकास संभव नहीं है, इसलिए ग्रामीण जीवन से जुड़ी सारी समस्याओं से अवगत होना हमारे लिए नितांत आवश्यक है । स्वतंत्रता के बाद गाँव की बदलती तस्वीर को ग्रामीण जीवन के विभिन्न पक्षों के माध्यम से समझा जा सकता है ।

प्रस्तावित शोध कार्य **मधुकर सिंह के कथा साहित्य में निरूपित ग्रामीण जीवन का अध्ययन** में मानवीय संवेदनाओ के लोप होने की बात की गई है । अतः गाँव की समस्याओं को समझना और उन समस्याओं का उपाय ढूंढना हो तो मधुकर सिंह के कथा साहित्य में प्रतिबिंबित ग्रामीण जीवन का अध्ययन और विश्लेषण जरूरी है।

संलग्न 4

शोध संदर्भित साहित्य का सर्वेक्षण

ग्रामीण जीवन पर आधारित साहित्य और मधुकर सिंह के कथा साहित्य पर विभिन्न लेखकों व शोधकर्ताओं द्वारा कई शोध कार्य हुए हैं। साहित्य सर्वेक्षण में प्रस्तावित शोध विषय से संबंधित जानकारी विभिन्न स्रोतों से प्राप्त की गई, जिनका विवरण निम्नवत् है:

1. मधुकर सिंह के कथा साहित्य दृष्टि एवं शिल्प, दीन दयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर

2.उपन्यासकार मधुकर सिंह, स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, नांदेड़

3.मधुकर सिंह के उपन्यास में वर्ग संघर्ष, वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, बिहार

4.प्रेमचंद एवं मधुकर सिंह के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय विवेचन जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार

5.विवेकी राय के कथा साहित्य में चित्रित ग्रामीण जीवन का यथार्थ, हैदराबाद विश्वविद्यालय

6.मार्कण्डेय के कथा साहित्य में प्रतिबिंबित ग्राम जीवन, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

7.कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में चित्रित ग्रामीण जीवन, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

8.रामदरश मिश्र के कथा साहित्य में चित्रित ग्रामीण जीवन, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

संलग्न 5

प्रस्तावित शोध कार्य में शोध संबंधी रिक्तता

हिंदी की अनेक विधाओं में ग्रामीण जीवन के दर्शन होते हैं, किंतु ग्रामीण जीवन संबंधी लेखन कार्य एक निश्चित दायरे में ही हुआ है। मधुकर सिंह के कथा साहित्य पर अब तक जितने भी शोध कार्य हुए हैं, सभी में ग्रामीण जीवन से संबंधित किसी एक पक्ष को ही निर्धारित किया गया है। किंतु मेरे शोध कार्य **मधुकर सिंह के कथा साहित्य में निरूपित ग्रामीण जीवन का अध्ययन** के द्वारा ग्रामीण जीवन के विविध पक्षों यथा सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक इत्यादि को जनमानस के सामने प्रस्तुत करने का प्रयास किया जायेगा। **मधुकर सिंह के कथा साहित्य में निरूपित ग्रामीण जीवन का**

अध्ययन मेरे शोध का विषय है । जहां तक मेरी जानकारी है उक्त विषय पर किसी प्रकार का शोध कार्य अभी तक नहीं हुआ है। ग्रामीण जीवन के क्षेत्र में आ रही मंथर गति को फिर से तीव्र गति की ओर अग्रसर करने में भी मेरा शोध नवीन आयाम स्थापित कर सकेगा ।

संलग्न 6

शोध प्रविधि/पद्धति

प्रस्तावित शोध अध्ययन के उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए प्रथम अध्याय में व्यक्तित्व कृतित्व पर आधारित होने से इस अध्याय के लिए व्यक्ति एवं इतिहास अध्ययन पद्धति के आधार पर शोध सामग्री का संगठन किया जाएगा । द्वितीय अध्याय में निगमन पद्धति अपनाते हुए ग्रामीण जीवन की अवधारणा व उसके स्वरूप को परिभाषित

किया जाएगा। तीसरे , चौथे, पांचवें, छठे अध्याय के अध्ययन के लिए वर्णनात्मक पद्धति का उपयोग किया जाएगा। इसके अलावा शोध कार्य के दौरान निम्न प्रक्रिया अपनाई जाएगी -

1.शोध विषय हेतु कथाकार मधुकर सिंह के कथा साहित्य का संकलन किया जाएगा।

2.शोध विषय से संबंधित संदर्भ पुस्तकों एवं ग्रंथों से सामग्री संकलित की जाएगी।

3.शोध विषय से सहसंबंधित पूर्ववर्ती शोधकर्ताओं के शोध प्रबंधों से सूचनाएँ प्राप्त की जाएगी।

4.पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित विभिन्न लेखों, साक्षात्कार एवं पत्राचार के द्वारा आवश्यक सामग्री जुटाई जाएगी।

5.इंटरनेट पर उपलब्ध विभिन्न वेबसाइट से भी जैसे विकिपीडिया इत्यादि के जरिए सूचनाएँ संकलित की जाएगी।

प्रस्तुत शोध विषय का अध्यायवत् विवरण

प्रस्तुत शोध विषय **मधुकर सिंह के कथा साहित्य में निरूपित ग्रामीण जीवन का अध्ययन** को अध्ययन एवं विश्लेषण की सुविधा की दृष्टि से सात अध्यायों में विभक्त किया गया है, जो इस प्रकार है:

अध्याय प्रथम: मधुकर सिंह का व्यक्तिगत एवं साहित्यिक पक्ष

अध्याय द्वितीय: ग्रामीण जीवन की अवधारणा एवं स्वरूप का विश्लेषण

अध्याय तृतीय: मधुकर सिंह के कथा साहित्य में निरूपित ग्रामीण जीवन का अध्ययन: सामाजिक पक्ष

अध्याय चतुर्थ : मधुकर सिंह के कथा साहित्य में निरूपित ग्रामीण जीवन का अध्ययन: आर्थिक पक्ष

अध्याय पंचम्: मधुकर सिंह के कथा साहित्य में निरूपित ग्रामीण जीवन का अध्ययन: राजनीतिक पक्ष

अध्याय षष्ठम्: मधुकर सिंह के कथा साहित्य में निरूपित ग्रामीण जीवन का अध्ययन: धार्मिक एवं सांस्कृतिक पक्ष

अध्याय सप्तम् : उपसंहार

अध्याय प्रथम

मधुकर सिंह का व्यक्तिगत एवं साहित्यिक पक्ष

1.1 मधुकर सिंह का व्यक्तिगत पक्ष

1.1.1 जन्म एवं परिवार

1.1.2 बचपन और शिक्षा

1.1.3 विवाह

1.1.4 अभिरुचि

1.1.5 आजीविका

1.1.6 पुरस्कार और साहित्यिक सम्मान

1.2 मधुकर सिंह का साहित्यिक पक्ष

1.2.1 उपन्यास

1.2.2 कहानी संग्रह

1.2.3 नाटक

1.2.4 बाल नाटक

1.2.5 जीवनी

1.2.6 संपादन

अध्याय द्वितीय

ग्रामीण जीवन की अवधारणा एवं उसके स्वरूप का विश्लेषण

2.1 ग्रामीण जीवन की संकल्पना
2.2 ग्रामीण जीवन के तत्व
2.3 ग्रामीण जीवन के विविध रूप
2.4 हिंदी साहित्य में ग्रामीण जीवन

अध्याय तृतीय
मधुकर सिंह के कथा साहित्य में निरूपित ग्रामीण जीवन का अध्ययन : सामाजिक पक्ष

3.1 ग्रामीण जीवन में व्याप्त जातिवाद
3.2 दलित विमर्श
3.3 स्त्री विमर्श
3.4 सामन्तवादी प्रवृत्ति
3.5 वर्ग संघर्ष
3.6 ग्रामीण समाज में शिक्षा की स्थिति

अध्याय चतुर्थ
मधुकर सिंह के कथा साहित्य में निरूपित ग्रामीण जीवन का अध्ययन: आर्थिक पक्ष

4.1 औद्योगीकीकरण की समस्या
4.2 कालाबाजारी

4.3 पूंजीवादी प्रवृत्ति
4.4 बेरोजगारी और गरीबी
4.5 जमींदारों और महाजनों द्वारा शोषण

अध्याय पंचम्
मधुकर सिंह के कथा साहित्य में निरूपित ग्रामीण जीवन का अध्ययन: राजनीतिक पक्ष

5.1 पुलिस दमन और अत्याचार
5.2 कोर्ट कचहरी की स्थिति
5.3 नौकरशाही भयावह स्थिति
5.4 भ्रष्ट आचरण की समस्या
5.5 जाति स्वार्थ और सत्ता की राजनीति
5.6 चुनाव की राजनीति
5.7 सरकारी योजनाओं की वास्तविक स्थिति

अध्याय षष्ठम्

मधुकर सिंह के कथा साहित्य में निरूपित ग्रामीण जीवन का अध्ययन: धार्मिक एवं सांस्कृतिक पक्ष

6.1 ग्रामीण जीवन में व्याप्त अंधविश्वास
6.2 पाप पुण्य की धारणा
6.3 देवी देवताओं की पूजा
6.4 साधु महात्माओं के बाह्याडम्बर
6.5 पर्व एवं त्यौहार
6.6 ग्रामीण मेले
6.7 ग्रामीण कृषि संस्कृति
6.8 परंपरा एवं रीति रिवाज

अध्याय सप्तम्

उपसंहार

इसमें **मधुकर सिंह के कथा साहित्य में निरूपित ग्रामीण जीवन का अध्ययन** शीर्षक के अंतर्गत आए सभी 6 अध्यायों का सारांश प्रस्तुत किया जाएगा। यहां पर ग्रामीण जीवन के विविध पक्षों को मधुकर सिंह के कथा साहित्य से जोड़कर उसका स्पष्टीकरण किया जाएगा। किन-किन स्तरों पर ग्रामीण जीवन में सुधार की आवश्यकता है, इसका पता इस शोध अध्ययन के बाद लगाया जा सकता है।

संलग्न 8

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ

उपन्यास

1.सबसे बड़ा छल, राजपाल एंड संस, दिल्ली, 1975

2.सीताराम नमस्कार, राजपाल एंड संस, दिल्ली, 1977

3.जंगली सूअर, राजपाल एंड संस, दिल्ली, 1978

4.मनबोध बाबू, शब्दकार, दिल्ली, 1978

5.उत्तरगाथा, विद्या प्रकाशन मंदिर, दिल्ली, 1979
6.बदनाम, बेमतलब, जिंदगियां, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1979
7.अगिन देवी, भारती प्रकाशन, दिल्ली, 1982
8.अर्जुन जिंदा है, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 1984
9.नपुंसक, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1986
10.मेरे गाँव के लोग, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, 1988
11.सहदेव राम का इस्तीफा, लिपि प्रकाशन, दिल्ली, 1988
12.सोनभद्र की राधा, जनप्रिय प्रकाशन, दिल्ली, 1988
13.कथा कहो कुंती माई, हिमाचल पुस्तक भंडार, दिल्ली, 2002
14.समकाल, प्रकाशन संस्थान, दिल्ली, 2004
15.बाजे अनहद ढोल, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2005
16.जगदीश कभी नहीं मरते, 2010
17.बेनीमाधो तिवारी की पतोह, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, 2010
18.नक्सलाइट रामरतन मास्टर, जनपथ, आरा, 2012

कथा संग्रह

1.पूरा सन्नाटा, सुषमा प्रकाशन, दिल्ली
2.हरिजन सेवक, चित्रलेखा प्रकाशन, दिल्ली
3.अगनुकापड़ पुस्तक भवन, दिल्ली
4.पहला पाठ, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
5.माई, पुस्तक भवन, दिल्ली

6.पाठशाला, पुस्तक भवन दिल्ली

7.माइकल जैक्सन की टोपी, हिमाचल पुस्तक भंडार, दिल्ली

8.दस प्रतिनिधि कहानियाँ, किताब घर, दिल्ली

9.पहली मुक्ति, क्षितिज प्रकाशन, दिल्ली

10.कालचक्र कथा, आचार्य प्रकाशन, इलाहाबाद

11.भाई का जख्म, चेतना प्रकाशन, आरा

सहायक ग्रंथ

1.डॉ ज्ञान अस्थाना - हिंदी उपन्यासों में ग्राम समस्याएं, जवाहर पुस्तकालय मथुरा, 1979

2.डॉ ज्ञान चंद गुप्त - स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास और ग्राम, अभिनव प्रकाशन दिल्ली, 1974

3.डॉ सुरेंद्र प्रताप यादव - स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास में ग्रामीण यथार्थ और समाजवादी चेतना, भावना प्रकाशन दिल्ली, 1992

4.डॉ ज्ञान अस्थाना - हिंदी उपन्यास में ग्राम, अमर प्रकाशन इलाहाबाद, 1979

5.डॉक्टर विवेकी राय - स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कथा साहित्य और ग्राम जीवन, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, 1972

6.डॉक्टर मोहम्मद जमील- अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में ग्रामीण जीवन का चित्रण, अन्नपूर्णा प्रकाशन कानपुर, 2006

7.डॉ राजेंद्र कुमार - स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी में ग्रामीण जीवन और संस्कृति, परिमल प्रकाशन नई दिल्ली, 1988

8. प्रोफ़ेसर गोपाल राय - हिंदी उपन्यास का इतिहास, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2016

9.जगजीवन राम - भारत में जातिवाद और हरिजन समस्या, राजपाल एंड संस दिल्ली, 1981

10.श्याम चरण दुबे - भारतीय ग्राम, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1994

11.डॉ केशव देव शर्मा - आधुनिक हिंदी उपन्यास और वर्ग संघर्ष, राधा पब्लिकेशन, दरियागंज, नई दिल्ली, 1991

12.डॉ जी के अग्रवाल - भारत में ग्रामीण और नगरीय समाज, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, 2019

13.सुरिंदर एस जोधका, संपादक - ग्रामीण परिवेश के बदलते जीवन में सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिप्रेक्ष्य, वाणी प्रकाशन, 2019

14.सुरिंदर एस जोधका, संपादक - ग्रामीण क्षेत्रों में मानव शास्त्रीय अध्ययन, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2019

15. सुरिंदर एस जोधका, संपादक - ग्रामीण विकास परिषद नीतियां और कार्यक्रम, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2019

16.डॉ दिव्या रानी - मधुकर सिंह के कथा साहित्य में सामाजिक चेतना, जेटीएस पब्लिकेशन, दिल्ली, 2019

17.डॉ अशोक कुमार सिन्हा - मधुकर सिंह के उपन्यासों में विविध संदर्भ, सारस्वत प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, 2016

18.राजेंद्र प्रसाद सिंह, डॉ संजय नवले - साहित्य में लोकतंत्र की आवाज, साहित्य संसद, नई दिल्ली, 2010

19.डॉ संजय नवले - उपन्यासकार मधुकर सिंह, विकास प्रकाशन, कानपुर, 2004